श्री श्याम सुधा

मण्डल

श्री श्याम सुधा

चतुर्थ पुष्प

प्रकाशक एवं संग्रहकर्त्ता

श्री श्याम मण्डल

२३/१, टैगोर केशल स्ट्रीट,

(नूतन बाजार)

कलकत्ता-६

फाल्गुन सुदी ११
सम्वत् २०२६

मार्च १९७३

मूल्य
प्रेम पाठ

"दो शब्द"

खाटू के बाबा श्याम का नाम कलिकाल में विख्यात है। आप महाबली भीम के पौत्र और घटोत्कच्छ के सुपुत्र बंबरीक थे। महाभारत के युद्ध में भगवान श्री कृष्ण को शीश का दान देकर इसयु ग में पूजित होने का बरदान प्राप्त किया।

अतः इस युग में मनुष्य के लिये हर प्रकार का योग, यज्ञ व साधना करना अनिवार्य है।

इस हेतु विगत कई वर्षों से प्रत्येक एकादशी को श्री श्याम प्रभु का संकीर्तन एवं जागरण २३/१ टैंगोर केशल स्ट्रीट, कलकत्ता-६ में होता आ रहा है। यहां श्री श्याम धनी का भव्य श्रृंगार एवं झाँकी सजाकर भक्तजन आनन्द विभोर होकर अपूर्व आनन्द प्राप्त करते हैं।

श्री श्याम मण्डल के सदस्यों को श्री श्याम सुधा का चतुर्थ पुष्प प्रस्तुत करते अपार हर्ष हो रहा है। इस पुष्प में हुई त्रुटियों के लिये मण्डल क्षमा प्रार्थी है, साथ ही उन सभी सहयोगियों का, जिन्ह ने समय-समय पर तन-मन-धन से अपना सहयोग देकर मण्डल की उन्नति में सहायक बने हैं, आभारी है।

मन्त्री
श्री श्याम मण्डल

विषय-सूची

गणेश बन्दना

"दोहा"

दुन्दाला दुःख भंजना सदा उजाला भेश।
सारा पहली सुमरियो गौरी पुत्र गणेश॥

रूनक झुनक पग नेवर वाजै गजानन्द नाचै।
गजानन्द नाचै विनायक गणपती नाचै॥ टेर॥

मूसक वाहन सून्ड सून्डाला एक दन्त साजै
गल पुष्पन को हार विराजै कोटिकाम लाजै॥ १॥

पिता तुम्हारे हैं शिवशंकर नान्देश्वर साजै
मात तुम्हारी है श्री गिरजा सिंह चढ़ी गाजै॥ २॥

विघ्न निवारण मंगल कारण राजन पती राजै
"तुलसीदास" गणपतजी न सुमरयाँ
दुःखदारिद्र भाजै॥ ३॥

श्री गुरू वन्दना

कर सेवा गुरु चरणन की,युक्ति यही भव तरनन की ।।टेर।।

गुरु की महिमा है भारी, वेग करे भव जल पारी ।
विपदा हरे यह तन मन की ।। कर सेवा ।।

मन की दुविधा दूर करे, ज्ञान भक्ति भर पूर करे ।
भेंद कहे शुभ कर्मन की ।। कर सेवा ।।

गुरु दयालू होते हैं, मन के मैल को धोते हैं ।
मोह हटावे विषयन की ।। कर सेवा ।।

भेद भरम सब मिटा दिया, घट में दर्शन करादिया ।
कैसी लीला दर्शन की ।। कर सेवा ।।

गुरु चरणों में झुक जाओ,"सत्य"कहे नितगुण गाओ
करो वन्दना चरणन की ।। कर सेबा ।।
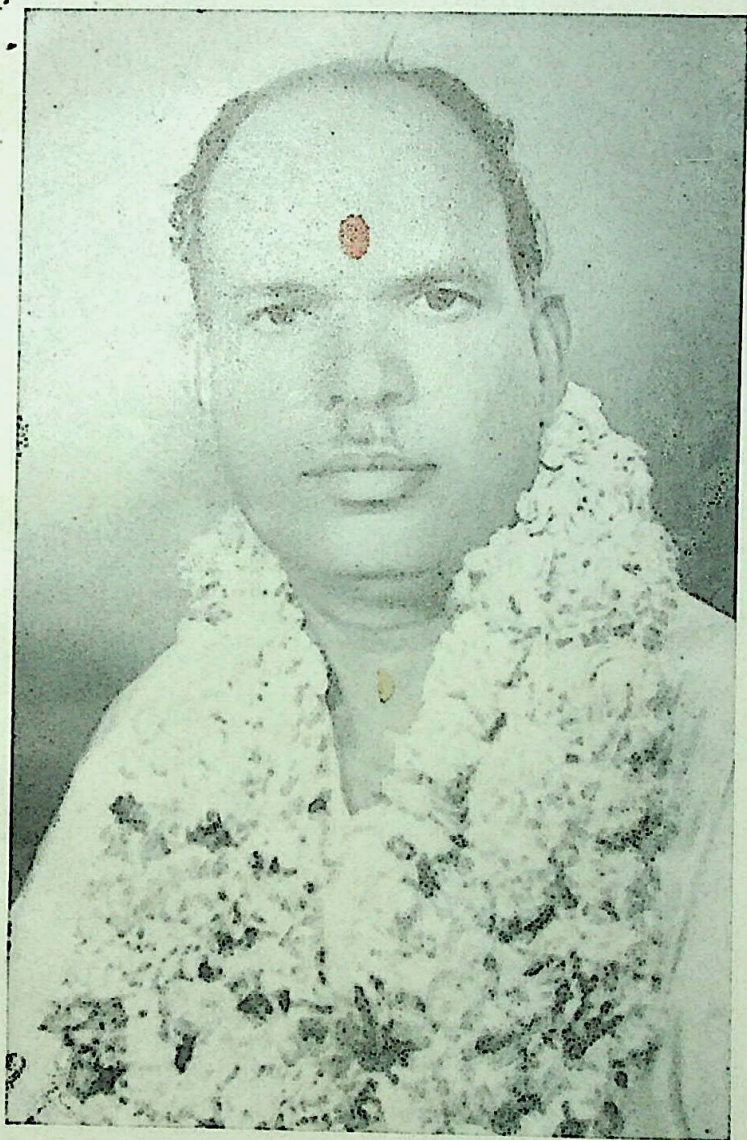
श्याम भक्त पं० काशीराम शर्मा (हिसारवाला)

बजरंगबली

वजर ंग बली नैया लगादो मेरी पार रे
मेरी नैया पड़ी है मझदार रे ॥
गहरी नदियाँ दूर किनारा, सुनलो विनती मेरी
चारो तरफ छाया अन्धियारा रखलो लाज अब मेरी
प्रभु मती लगाओ देरी रे ॥ वजर ंगवली ॥
किस घर जाऊँ किसको सुनाऊँ, सुझे न कोई रस्ता
दिन दुःखी दर-दर का मारा ये जग मुझ पर हस्ता,
मेरी विपता हरो बलकारी रे ॥ वजरंगबली ॥
एक भरोसा करके तुम्हारा बैठा हूँ आश लगाये
सब नातो को छोड़ के बैठा चरणों में ध्यान लगाये
तेरा ध्यान धरे नर नारी रे ॥ वजर ंगवली ॥
संकट मोचन नाम तिहारो संकट दूर भगाओ
दीन दुःखी दीनन हीतकारी आज मुझे अपनाओ
क्या पाप किया मैंने भारी रे ॥ वजर ंगवली ॥

"शिव आराधना"

जटा में तेरे गंग विराजे, गल सर्पों की माला डमरू वाला,
जय हो डमरू वाला ॥ टेर ॥

तेरी माया किसी नें न जानी,
तूँ तो सबसे बड़ा है दानी।
ओ कैलासी, ओ अविनाशी, तूँ है देव निराला ॥ डमरू ॥

नित अङ्ग विभूति रमाये,
जानें किसका तूँ ध्यान लगाये।
रहता है अलमस्त ध्यान में पीकर भंग का प्याला ॥ डमरू ॥

कोई द्वार तुम्हारे आये,
तुमसे जो मांगे सो पाये।
कोई सवाली, जाय न खाली, सबको देने वाला ॥ डमरू ॥

भोले सुनलो अरज हमारी,
हम आये शरण तुम्हारी।
तारा चन्द और बाबुलाल भी, जपे तुम्हारी माला ॥ डमरू ॥

मैया

नैन खोल देख मैया, भक्त की पुकार है।
दीन दुखियारे सारे, आये तेरे द्वार हैं॥ टेर॥
सिंह की सवारी थारी, वात ही निराली है।
गल मुण्ड माल तूं ही, काली मतवाली है।
ज्ञानी और ध्यानी तेरो, पायो नहीं पार है॥ दीन॥
तूँ ही नव दुर्गा है, चण्डिका विशाल है।
शारदा भवानी तू ही, करे प्रति पाल है।
झुन्झनूं के माँय मैया, तेरो दरवार है॥ दीन॥
पाँडवों की तुमने, ही लाज वचाई थी।
याद करी जव, दौड़ी दौड़ी आई थी।
ऐसो ही अपार मैया, तेरो भक्तों से प्यार है॥ दीन॥
शुम्भ और निशुम्भ मैया तैंने, ही बिडारे हैं।
महिषा सुर से मैया तैंने, दैत्य पछाड़ें हैं।
देर न लगाओ मैया, दिल वेकरार है॥ दीन॥
नैन खोल देख मैया, भक्त की पुकार है।
दीन दुखियारे सारे, आये तेरे द्वार हैं॥

—:—

निशान

अब तो पलक उठा कर देख तेरो ल्याया छ निसान । टेर ।

हल्को भारी जैसो भी हो तेरो निशान सजायो रे ।
प्रेम भक्ति और श्रद्धा को यो साँचो है निशान ॥ १ ॥

ले निशान यो हाथ म तेरो नाम श्याम गुण गाँवा रे ।
हसँता गाता नाच कुदता पहुँचा खाटू धाम ॥ २ ॥

तेरे निशान चढ़ाकर बाबा हिल मिल होली खेला रे ।
केशर चन्दन लाल गुलाल से लाल हुयो असमान ॥ ३ ॥

तेरे निशान क नीच बाबा निर्भय होकर जीवा रे ।
सब म प्रेम वढ़ा द्यो ऐषो दो काया एक जान ॥ ४ ॥

श्याम बिहारी राधे तेरे चरणा शीश नवाव रे ।
श्याम मण्डल के टाबरियो को हरदम रखयो ध्यान ॥ ५ ॥

'काशी' तेर चरणा को प्रभु नीत की ध्यान लगाव रे ।
असुँआ की माला से तेरी आरती करे महान ॥ ६ ॥

गुजारो

गुजारो मेरो तेरे सहारे मेरा, जीवन धन गोपाल ॥ टेर ॥

कोई नहीं इण जगमें मेरो, एक तुही प्रतिपाल।
आँख चुरावो गा जद थेई, कुण पूछै मेरो हाल ॥ गुजारो ॥

छोड़ चरण थाका कित जाऊँ, मुरलीधर नन्दलाल।
दूर करो हे कृष्ण मुरारी, माया रो भ्रम जाल ॥ गुजारो ।

मोर मुकुट थारे सिर सोहे, गल वैजंती माल।
थे विसर्‌याँ नाँ काज सरैलो, सुधल्यो दीन दयाल ॥ गुजारो ॥

धीरज की भी हद तो होसी, बीत्या कितणा साल।
"काशीराम" करो नाँ देरी, अर्ज करै थारो लाल ॥गुजारो॥

दीननपति

दीननपति श्री श्याम देव थारै शरणैं आयो जी।
पाँडवकुल सिरदार आपको तेज सवायो जी॥

नदिया गहरी दूर किनारा, नाव पुरानी चंचल धारा
सबल जानकर लिया सहारा, पार लगायो जी॥ दीननपति॥

जनमन का दुःख हरने वाले, खाली झोली भरने वाले
निश दिन मंगल करने वाले, मोहि निभायो जी॥ दीननपति॥

सुमरन में मनवा नहीं लागै दूर–दूर थारै सूँ भागै
साँच कहूँ प्रभु थारै आगै, कछू समझायो जी॥ दीननपति॥

पतित उबारन नाम तिहारों, डूबत हूँ भवसागर तारो
"काशी" शरणागत हूँ थारो, भूल न जायो जी॥ दीननपति॥

रमैया

कब आवोगे रसया म्हारै देश ऊबी जोऊ बाटड़ली

(१)

मन मन्दिर में ज्ञान वहारी दे दीनी भरपुर
पाप का कुड़ा सोर भगाया फेंक दिया सब दुर
म्हार नैणा म विराजो नन्दलाल ।। ऊबी जोऊँ ।।

(२)

सावरी सुरत मन वसी तेरे घुंघर वाले केश
जादुगारी वासुरी तेरो नटनागरियो भेष
म्हार आंगनिया म आवो घनश्याम करागां मनवार घणी ।।कब।।

(३)

पलका पर पग मेलता जी उतरया मन्दिर बीच,
दर्शन करस्या भोग लगास्या दौनू आँख्या मीच
थारा चोखा-चोखा करस्या सिणगार,
खुवावा थान माखन मिश्री ।। कब ।।

(४)

ठाकुर क सिंहासन ऊपर ज्ञान विछायो चीर,
मैं तो कुछ जाणू नहीं तुम जानो रघुवीर ।
गावै मीरा वाई भजन वनाय मेरें तो एक श्याम धणी ।। कब।।

दयालू

तर्ज :—आने से तेरे आये बहार

दीन दुःखी से जो करता है प्यार,
गरीबो के जीवन में लाये वहार,
दीनों का दयालू है, बाबा श्याम जी, ॥ टेर ॥

फागुन में तेरा मेला, लगता है मेला भारी,
बाबा आके तेरे दर पे झूकती है दुनिया सारी,
मन चाहे,वो वर पाये ऐषा वरदानी है ॥ बाबा श्याम जी ॥

लीले घोड़े की असवारी, केसरिया पाग है प्यारी,
भक्तों की पीर मिटाने, फिरते है वनवारी,
गुण गाते, दुःख भागे, तेरी ये कहानी है ॥ बाबा श्याम जी॥

तुने तो कितनो की ही नैया पार लगादी
मंझदार से उबारा और नैया किनारे लगादी,
अर्जी मेरी मर्जी तेरी, पुजारी भी शरण है ॥ बाबा श्यामजी ॥

मारवाड़ी

अस्थाई

ओ खाटु का बाबा श्याम तूँ लीले चढ़कर आज्या ।
तूँ लीले चढ़कर आज्या, भक्तों का कष्ट मिटाज्या ॥
हो ज्या मन का पुरण काम तूँ लीले ··· ···॥ टेर ॥

अन्तरा

नैया पड़ गई बीच भँवर में, भारी अथा ये जल में ।
नैया हो रही डावाँडोल, केवट बन पार लगाजा ॥ टेर ॥
मैं गयो नें दूजे द्वार, जो दिखे मोय सहारा ।
बाबा थारो ही आधार, तूँ आकर कष्ट मिटाज्या ॥ टेर ॥
"आलु सिंह"कहे सुनो पियारा दो हुक्म होयनिस्तारा ।
घनश्याम को तूँ ही श्याम, तू लीले चढ़कर आज्या ॥ टेर ॥

होरी

खाटू में श्याम खेलत होरी ॥
तरह-तरह का रंग मगाया,
मटकन में केशर घोरी ॥ १ ॥
लाल गुलाल लाल भये बादर,
भक्त तेरे श्याम गावे होरी । २ ॥
आज बने है छैल छबीले,
सब के मुख में लगत है होरी ॥३॥
ढ़प बाजत है मन को लुभावत
मगन भयी भक्तन टोरी । ४ ॥
"काशी" चरणों पर बलि जाऊँ,
तेरे द्वार बिछाई झोरी ॥ ५ ॥

गोविन्द

गोविन्दा रे! थार खाटू को वड़ो नाम रे
हमने सुना है वहां मुरदे भी जिन्दे होते
मन के पुरे होते अरमान रे—गोविन्दा रे ॥ थार ॥

निरधन जो आशा लेके थार दरवाज जाते
उसको मिलता है धन और मान रे—गोविन्दा रे ॥ थार ॥

ब्रह्मा और विष्णु जहां शंकर भी रहते वहां
वजरंगी बैठ्यो सीनों तान रे—गोविन्दा रे ॥ थार ॥

अन्तर चढ़ावे कोई माला पहराव कोई
अरजी लगाव गोडी ढाल रे—गोविन्दा रे ॥ थार ॥

खीर वनाता कोई लाडू चढ़ाता कोई
दुध मलाई सुवह शाम रे—गोविन्दा रे ॥ थार ॥

श्याम बगीची प्यारी कुण्ड की शोभा न्यारी
न्हाया से कंचन होज्या चाम रे—गोविन्दा रे ॥ थार ॥

राम कुमार थार चरणा मँ शीश धरै
कृपा तो राखो आठो याम रे—गोविन्दा रे ॥ थार ॥

टाबरिया

क्यूँ सूत्या हे भगवान बिलख रह्या टाबरिया।
रो-रो-दे-दे सी जान बिलख रह्या टाबरिया॥

पीस पीस सूँ दुनिया चिपट रही
निर्धन को कुण भगवान बिलख रह्या टाबरिया॥ क्यूँ॥

चोट लगे जिसके पीड़ा वो जाण
संकट में फँस गया प्राण – बिलख रह्या॥ क्यूँ॥

आफत आयोड़ी टालो श्याम धणी
कृपा कर कृपा निधान – बिलख रह्या॥ क्यूँ॥

टाबर गोरो है चाहे कालो है
मायत के लिये समान – बिलख रह्या॥ क्यूँ॥

मुट्ठी भर कर भी म्हान दे दे सी
म्हार सौ गाड़ी के समान – बिलख रह्या॥ क्यूँ॥

दीना नाथ विना रामकुमार कठे
मिनखा न मिलसी त्राण – बिलख रह्या॥ क्यूँ॥

भजन

म्हारो मनड़ो छम-छम नाचे म्हारे घर आयो श्री श्याम।
म्हारे घर आयो श्री श्याम म्हारे घर आयो घनश्याम ॥ टेर ॥

कार्तिक सुदि ग्यारस न श्यामा आप लियो अवतार।
खाटू धाम में आप विराजे ज्योति जले विसाल ॥ म्हारो...

फूल तोड़ बागां स ल्यायो माला पोई चार।
ये माला बाबा जी पहरो शोभा वरणी न जाय ॥ म्हारो...

हरी छाबड़ी लाल छाबड़ी जिसमें भरया गुलाब।
फूलां से थारी झाँकी सजाई महक रह्यो दरबार ॥ म्हारो...

खीर चूरमो माखन मिश्री को ल्यायो भरके थाल।
दास किशोरी भोग लगावे प्रभु करो, स्वीकार ॥ म्हारो...

पान बनारसी मघई ल्याया बीड़ा बनाया चार।
यो बींड़ौ बाबा जी चाबौ हो जाये होंठा लाल ॥ म्हारो...

जेठ सुदी ग्यारस न थारो उत्सव होव अपार।
'श्याम मण्डल' का टाबरियाँ तेरी घणी करै मनुहार ॥ म्हारो...

श्याम धुनी चहूँ ओर है गुँजी रूप अनूप अपार।
दास 'भागीरथ' चरणां में तेरे करतो जै जैकार ॥ म्हारो...

तृतीय वार्षिकोत्सव की समाप्ति पर भक्तजनों के बीच आरती गाते हुए
पं० काशीराम जी शर्मा
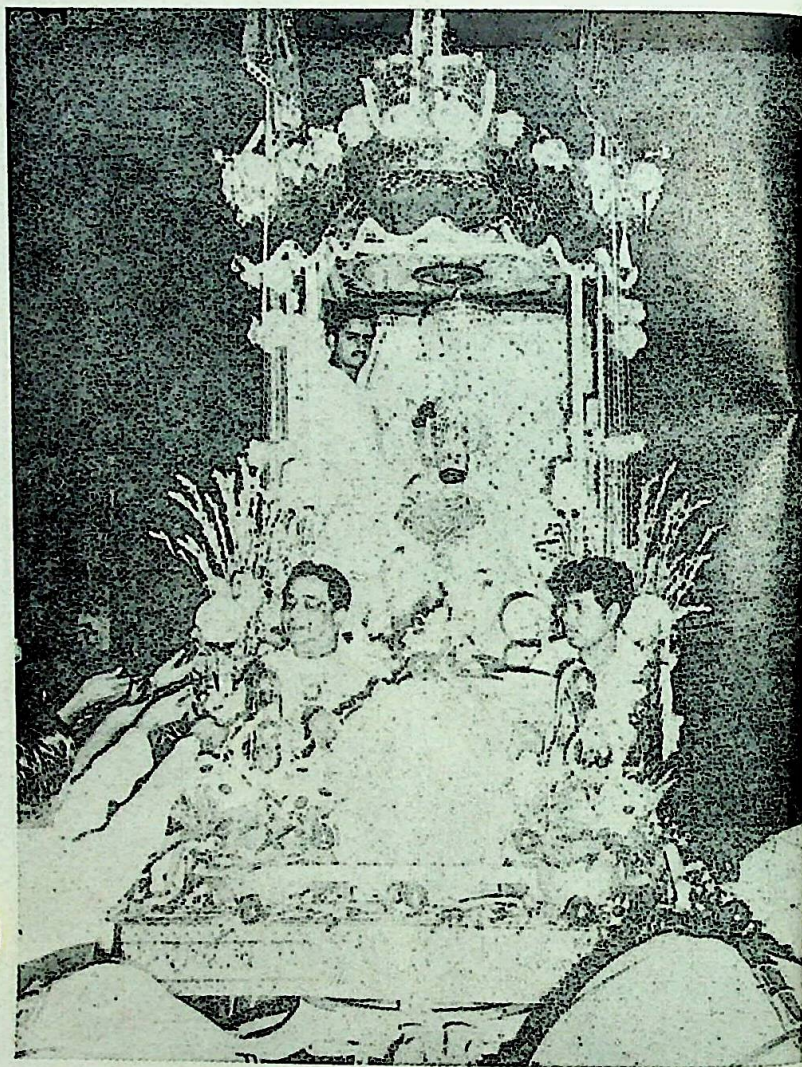
श्री श्याम प्रभु की शोभा यात्रा का एक दृश्य
(ज्येष्ठ सुदी १२ सम्वत् २०२९)

सकलाई

जेठ सुदी वारस के दिन तो निकले श्याम मुरार।
रथ के ऊपर बठ के तो घुमन चले सरकार ॥
तर्ज :—बाबा क्यूँ कर आख्या मिची रे।

—: अस्थाई :—

देखो बाबा की सकलाई रे,
कलकत्ते की गली २ में ज्योति घुमाई रे ॥ टेर ॥

अन्तरा

जेठ सुदी ग्यारस न बाबा श्याम को उत्सव आव।
सगला प्रेमी भेला होकर भजन श्याम का गाव ॥
देखो श्याम की शोभा न्यारी रे ॥ टेर ॥
काला पीला बादल छाया काली घटा घिर आंई,
सभी जणा क मन में होगी देखो बिरखा आई।
बाबो बिरखा न थमाई रे ॥ टेर ॥
भीमसेन को लाडलो खाटू स दोड़यायो
नुतन बजार में आकर देखो कैसो रंग जमायो।
बैठ्यो जन भवन क माई रे ॥ टेर ॥
ऊँच सिंहासन बैठ्यो बाबो, तोरण की छवी न्यारी,
नीवुआं रंग को जामो पहरयो उपर छत्तर हजारी।
यो सिणगार सजायो भारी रे ॥
बजरंगी न साग लेकर आया श्याम बिहारी,
खीर चुरमों भोग लगावो भेट चढ़ावो न्यारी।
थारी जल्दी कर सुणाई रे ॥ टेर ॥
"काशीराम जी" गुरू हमारा नगर हिस्सार स आव,
"श्याम मण्डल" का सारा टावर चरणा शीश नवाव।
गाथा पालीराम सुणाई रे ॥ टेर ॥

मारवाड़ी

अस्थायी

साचा तेरो नाम श्याम साचो तेरो काम।
झूठी जग की कामना साचो हरि को नाम ॥ टेर ॥

अन्तरा

ऐसो काम कियो भारत में, साचो पायो नाम।
भीम बली के पुत्र लाडले खाटू आँको धाम ॥ १ ॥
रण भूमि में शीश दान दियो देखो इनको काम।
दुनिया सारी अर्ज करै छः बहुत बड़ो है श्याम ॥ २ ॥
नोरंग जचाई शाह-करतो पहुंचो जचाई खाटू धाम।
ले परचो नोबत चढ़वाई दिल्ली वाको ग्राम ॥ ३ ॥
'घनश्याम' गाडियो कहभक्तोंसे जपोयारो नाम।
ऐसो है यो पर उपकारी दुनिया में सरनाम ॥ ४ ॥

उबारो

सम्हालो केशव हूँ अनजान ॥ टेर ॥

यो भवसिन्धु मुरारी गहरो।
कदम कदम पर मौत को पहरो।
उबारो मोकूँ कृपा निधान ॥ सम्हालो ॥

तुम हो इस नैया के मांझी।
तेरी रजा में ही मन राजी।
तुम्हीं हो दीनों के सन्मान ॥ सम्हालो ॥

वीत गये कितने युग दाता।
थासूं जनम जनम का नाता।
तिहारो बालक है नादान ॥ सम्हालो ॥

मो में कुछ शक्ति नहीं भक्ती।
श्याम घटा चहुं ओर वरसती।
बचालो "काशी" हूँ अज्ञान ॥ सम्हालो ॥

नजारो

तर्ज :—मुरली की धुन····

नैणां को नजारो मेरो काळजो बिण्यार्‌यो
तो चाण चुकी छानै छानै,
आजा दरश दिखावानैं।
मलमल दूधा सूं तनैं र नुहास्यूँ।
तेल फुलेल और अतर लगास्यूँ।
तो जै तूँ साँवरिया मेरी बात मानैं॥ आजा॥
नया नया तेरा लाड लडास्यूँ।
माखन मिसरी तनैं खुवास्यूँ।
तो क्यूँ नां मेरैं काळज की पीड़ जाणैं॥ आजा॥
काशी राम कहे रै सैलानी।
तेरै मिलण की मनमैं रै ठानी।
तो निठुराई र मतना ठानैं॥ आजा॥

नार

तूँ क्यूं नाटै ये नार चालाँ बाबै कै ॥ टेर ॥

खाटू माँई ये मिलसी बाबलियो
बैं को मोटो दरबार ॥ चालाँ ॥

निश्चय करले ये सांचो सांवरियो
तेरा होज्या बेड़ा पार ॥ चालाँ ॥

अड़ियल टट्टू ये गोरी म्हारी क्यूँ बणैं
इब चालण में ईं सार ॥ चालाँ ॥

दुनियां जावं ये गोरी म्हारी चाव सैं
क्यूं तेरै चढ़ी बुखार ॥ चालाँ ॥

ग्यारस आगी ये नीड़ै सोचले
तूँ मतनां करै ऊँवार ॥ चालाँ ॥

अनधन देसी ये गोरी म्हारी मोकलो
कोई आँगण नन्दकुमार ॥ चालाँ ॥

दुवध्या माई ये "काशी" क्यूं फसी
यो श्याम बड़ो दातार ॥ चालाँ ॥

मतवालो

तर्ज :—पंजाबी

म्हारो श्याम जी बड़ो मतवालो,
दरश बिन जियो तरसै।
यो तो लीलै घोड़ै वालो ॥ दरश ॥

नित की करां मनावणां।
ओ भक्तांरा पावणाँ।
तूँ लेव मतना टालो ॥ दरश ॥

थाँ को म्हाँ को मेल है।
प्रीत नहीं कोई खेल है।
वेगा आय सम्हालो ॥ दरश ॥

धीरज छूटै देर करयाँ।
काम सरैगो म्हैर करयाँ।
वृज गोपी वोलै कालो ॥ दरश ॥

"काशी" थारो बालको।
दुख हरल्यो ई लाल को।
तूँ ईं छः रखवालो ॥ दरश ॥

जीवन में

तर्ज :—साजन-साजन पुकारू

श्यामा जब से उतारा तुम्हें जीवन में।
आग लगी है मेरे तन मन में ॥ श्यामा ॥
सब कुछ खोया सब कुछ पाया।
दिल को फिर भी चैन न आया।
छाया मुरारी मेरे प्राणने में ॥ श्यामा ॥
पुतलिन में तश्वीर तुम्हारी।
खैंची दिल से कृष्ण मुरारी।
पी का दरस रस पीवन में ॥ श्यामा ॥
विसर न पाऊँ नीर बहाऊँ।
पागल मन कैसे समझाऊँ।
देरी लगाई तैनें आवन में ॥ श्यामा ॥
हृदय कमल पर आन विराजो।
मन वीणा को मोहन साजो।
"काशी" कसक भरी नैंनन में ॥ श्यामा ॥

लगन

मोहे लागी रे लगन हरि दर्शन की ॥ टेर ॥
दर्शन विना मेरो मन तड़फत है
जैसे मछलियाँ जल बिन की ॥ मोहे ॥
मोर मुकुट मकरा कृत कुण्डल
गल बिच माला मोतियन की ॥ मोहे ॥
कर कंगन भुज वन्दन सोहे
काँधे कमरिया ओढ़न की ॥ मोहे ॥
अधरन पे मुरली अति प्यारी
कैसी छटा है पीताम्बर की ॥ मोहे ॥
ठुमक ठुमक चाल चलत है
पग पैंजनियाँ झन झन की ॥ मोहे ॥
सूरदास के श्याम बिहारी
पार करो नैया अटकी ॥ मोहे ॥

गिरधर साँवरिया

म्हारी अबकी अबकी अटकी नया पार लगावोजी ।
गिरधर साँवरिया हो नटवर नागरिया ।
एक दिन थारो भगत साँवरा अरब पति कहलायो ।
परणांकर म्हान सीख देई करोड़ां रो द्रव्य लुटायो ।
मैं आज बणी निर्धन की बेटी लाज बचावो जी ॥१॥

दोहा—सासरियो दुश्मन भयो, तो प्यारा भया ब्रजराज ।
कपट भरी पत्री लिखी, कोई लेण पिता की लाज ॥

घोराणा जीठाण्या म्हानै नितकी बोली बोल ।
देवरियो नादान म्हार भरूया घाव न छोल ॥
म्हार बावाजीक विष्णु धर्म की लाज बचावोजी ॥२॥

दोहा—सती द्रोपदी न प्रभु समझ धर्म की बहन ।
सभा बीच में राख लेई प्रभु पाण्डव कुलकी आन ॥

म्हारी लाजभी राखो साँवरा हिवड़ो धार धीर नहीं ।
मैं निर्भागण अबला हूँ म्हारो माँको जायो बीर नहीं ।
थारी नानी बाई न लाल चूनड़ी आन उढ़ावो जी ॥३॥

श्याम से पुकार

श्याम गुण गाले बंदा वेड़ो तेरो पार है,
खाटू वालो श्याम वाबो वड़ो दिलदार है ॥ टेर ॥

बिना ही पीये तन मस्त वनावगो,
भाँति-भाँति का सीन यो दिखावगो,
कारीगर साँचो तेरो श्याम सिरदार है ॥ खाटू वालो ॥

श्याम रंग वूटी को स्वाद ही निरालो है,
अर्जुन ने पी तो भयो मतवालो है,
दौड़यो आयो द्रोपदी की सुनी जो पुकार है ॥ खाटू वालो ॥

प्रेम में मगन होय छिलके भी खा गये,
भोली विदुरानी के भाग्य जगा गये,
श्याम से मिताई करएँ में ही सार है ॥ खाटू वालो ॥

कुब्जा ने श्याम संग प्रितड़ी लगायली
श्याम गुण गाय मन मैंना जगायली
श्याम ही के हाथ मायं तेरी पतवार है ॥ खादू वालो ॥

श्याम के विरह में बृज गोपियां दीवानी थी,
उधो ने यह वात पहले न जानी थी,
भूल गये तत्व ज्ञान देख वाको प्यार है ॥ खाटू वालो ॥

दोस्ती सुदामा की श्याम ने निभाई थी,
तंदुल की दोय मुठ्ठी प्रेम से चवाई थी,
विपदा निवारी सारी लागी नही बार है ॥ खादू बालो ॥

विना ही बीज खेती निपजाई थी,
सुवरण की वर्षा वरसाई थीं,
मायरों भरन आयो नरसी के द्वार है ॥ खादू वालो ॥
सूर रसखान दोनूँ श्याम न पिछानगा,
मिलसी कठै बी ठिकान न जानगा,
मीरा मतवाली भई श्याम ही के लार है, ॥ खादू वालो ॥
जमुना किनारे श्याम गऊए चराई थी,
मुरली बजाय वृज गोपियाँ रिझाई थी,
"शींव" की वार-बार श्याम से पुकार है ॥ खादू वालो ॥

— :o: —

भजन

अखियाँ हरी दर्शन की प्यासी,
अखियाँ श्याम दर्श की प्यसी।
देख्यो चाव कमल नयन को,
निश दिन रहत उदासी ॥ अखियाँ ॥
मोर मुकुट मोतियन की माला,
वृन्दाबन के वासी।
नेहा लगाय छाड़ गयो तृण सम,
घाल गयो गल फाँसी ॥ अखियाँ ॥
काहू को मन की को जानत,
काहू के मन हासी।
सूरदास प्रभु तुमरे दर्श बिन,
लेवे करबट "काशी" ॥ अखियाँ ॥

मेरा यार

कहदे सांवरिया न सारी तेरी बाता मेरा यार।
सारी बाता मेरा यार करले आँख्या दो सें चार ॥टेर॥

आज नहीं तो काल नहीं तो परस्यू यो ही सुनसी,
थोड़ो धीरज राख बावला माग्योड़ो मिल जासी।
देव भर-भर मुठी खाटू वालो, जो भी जाव द्वार ॥टेर॥

लाख दुःखा की एक दवाई क्यूँ ना आज मावे,
मन में हो विश्वास भभूति रामवाण बन जावे।
मार्यो-मार्यो क्यूँ फिर है, तेरी काया न सुधार ॥टेर॥

कभी किसी को बूरा न कहना साँवरियो या बोल,
एक तखड़िये करनी बैठी दूजी पर फल तोल।
नई तो देखजरा अजमाके, यो हैं साँचलियो दरबार ॥टेर॥

मन का घूँघट देख उठा के श्याम पति मिल जासी,
प्रेम भाव से एक श्याम को सच्चा मन से गाती।
झुठी दुनियादारी गोरख–धन्धा, कहता रामकुमार ॥टेर॥

मोर की छड़ी

छोटी सी अर्दास गुरुजी चरणा म पड़ी।
लगा के श्याम से अर्दास मिटाद्यो संकट की घड़ी ॥ टेर ॥

अन्तरा

सार जग म भटक्यायो पर कोई सुणी ना वात,
थार आग अर्ज करा म्हें जोड़ा दोनू हाथ,
म्हारी अभिलाषा न पुरी करध्यो इब की घड़ी ॥ टेर ॥

गिरतो पड़तो ठोकर खातो थार निड़ आयो,
काम मेरो छोटोसो गुरुजी करध्यो मनको चायो,
मेरा शीर पर धरध्यो हाथ लेकर मोर की छड़ी ॥ टेर ॥

ऐषो द्यो बरदान गुरूजी नीत उठ दर्शन पावा,
फागुन के मेल पर थार कुटुम्ब सहित म्हें आवा,
श्याम मण्डल में लगाध्यो थे प्रेम की झड़ी ॥ टेर ॥

सेवक "पाली राम" थार चरणा शीस नवाव,
ऐसी छाप लगाध्यो म्हार किस्मत पल्टी जाब,
म्हारी पार कराध्यो नेया थार भरोस पड़ी ॥ टेर ॥

मिलन की आश

तर्ज :—येही अरमान लेकर (फिल्म शबाब)

मिलन की आश लेकर आज तेरे दर पे आया हूँ।
तेरा दिवाना हूँ मैं तेरे दर्शन को आया हूं ॥
हटादे आज तो पर्दा झलक छोटी सी दिखलादे
मिलाले आज तो नजरे जरा होठो से मुस्कादे—२,
यही फरियाद लेकर आज तेरे मन्दिर में आया हूँ ॥ तेरे दर्शन ॥
कभी इकरार करते हो कभी इन्कार करते हो,
कभी तो प्यार करते हो कभी ठुकराय देते हो—२,
मगर दर से ना जाऊँगा मैं तेरे दर पे आया हूँ ॥ तेरे दर्शन ॥
समझ लेना कि मैं भी आज दिल में ठान बैठा हूं,
छूपोगें कब तलक मुझ से मैं तेरे दर पे बैठा हूँ—२,
अगर ठोकर लगे तो क्या, मैं तेरे घर पे बैठा हूँ ॥ तेरे दर्शन ॥
सताने में मजा तुमको अगर आये सतालो तुम,
जलाने में अगर तेरा नफा हो तो जलालो तुम—२,
मिटाने मेरी हस्ती को मैं तेरे, दर पे आया हूँ ॥ तेरे दर्शन ॥

सीता की कहानी

सुनो सीता की कहानी, थी वो महलो की रानी
छोड़ घर वार चली वनवास, किसी ने कदर न जानी।
राम सिया राम जय-जय सिया राम २ ॥
पग-पग ठोकर खाये सीता, सींता बनी अभागन,
पाँव में उनके छाले पड़ गये नैन कमल मुरझाये,
देख के उसकी दारून हालत, नैण मेरे भर आये-२ ॥
॥ सुनो सीता की कहानी ॥
लव कुश जन्मे वनमें भैया, फुल उठी तब सीता मैया,
अबला को बल मिल गया, और नैणको मिलगयी ज्योति।
राम याद में पल पल वीतें, राम को भूल न पाये—२ ॥
॥ सुनो सीता की कहानी ॥
छिड़ गया युद्ध पिता पुत्र में, कैसा युग ये आया,
सोच के हो गई मुरक्षित सीता, तूने ये क्या किया।
ये कोई तो और नहीं है, तेरे तात है आये—२ ॥
॥ सुनो सीता की कहानी ॥
लव कुश दोनो लाल है तेरे, पिता बिना वेहाल हुये है
"रतन लाल" की अन्तिम ईच्छा,
बन्द करो अब युद्ध ये मिथ्या।
स्नेह प्रभू से कभी ना टूटे, प्यार ना मिटने पाये—२ ॥
॥ सुनो सीता की कहानी ॥

वाटड़ली

मूरत थारी सोहे है, म्हारे मनड़े ने मोहे है।
हिवड़ो तो प्रभु थारी, वाटड़ली ही जोवे है ॥टेर॥

थे तो शिव सुखगामी हो, थ अर्न्तयामी हो,
थे तो नाथ अनाथो रा, घट-घट का स्वामी हो,
थारे गळ बीच माला सबरो मन मोहे है ॥ हिवड़ो तो प्रभु ॥

थे नाथ बणो म्हारा, म्हें दास बना थाराँ,
ज्ञाना सूँ भरो झोली, हाँ शरण प्रभु प्यारा,
नवरत्नों सूँ राची, अँगियाँ, थारे सोहे है ॥ हिवड़ो तो प्रभु ॥

थारो नाम है सुखकारी, थाँरी महिमा है न्यारी,
कोई पार नहीं है थारो, थे जगरा हितकारी,
"श्याम मण्डल"ने प्रभुजी थारी मूरत मोहे है ॥हिवड़ो तो प्रभु॥

भगत की लाज

भगवान भगत की लाज अब तेर हांथा म

घेर लियो है र च्यारू कानी सूं

मेरी नया न तूफान अब तेर हांथा मँ ॥ भगवान ॥

अपणा जो भी था दुश्मन वण बैठ्या

निर्भर थार पर ज्यान अब तेर हांथा मँ ॥ भगवान ॥

तुम पतितों के हो स्वामी श्याम प्रभु

मेरा तन-मन धन और प्राण अब तेर हांथा म ॥ भ० ॥

नैया कितणों की तू ने पार करी

द्यो कुछ मेरे पर ध्यान अब तेर हांथा मँ ॥ भ० ॥

तड़फूंगा वतला दरसन बिन तेरे

मैं कितने दिन घनश्याम अब तेर हांथा मँ ॥ भ० ॥

राम कुमार है ओ मुरख अज्ञानी

भो लो ढ़ालो इन्सान अब तेर हांथा मँ ॥ भ० ॥

चरणों का दास

जीवन का मैंने सौंप दिया सब भार तुम्हारे चरणों में
अब जीत तुम्हारे चरणों में और हार तुम्हारे चरणोंमें

सुख दुख का साथी श्याम मेरा
घर बार मेरा संसार मेरा
मेरा नाम तुम्हारे चरणों में बदनाम तुम्हारे चरणों में ।।जीवन।।

नहीं धन की है परवाह मुझे
सुख से जीऊ बस चाह मुझे
हर सांस तुम्हारे चरणों में निःश्वास तुम्हारे चरणोंमें ।।जीवन।।

करुणा निधि श्याम सुनो बतिया
किसको दिखलाऊ फटे छतिया
हर दर्द तुम्हारे चरणों में आराम तुम्हारे चरणों में ।।जीवन।।

गुण गाता राम कुमार तेरा
झोली फैलाता दास तेरा
मेरी आस तुम्हारे चरणों में विश्वास तुम्हारे चरणोंमें ।।जीवन।।
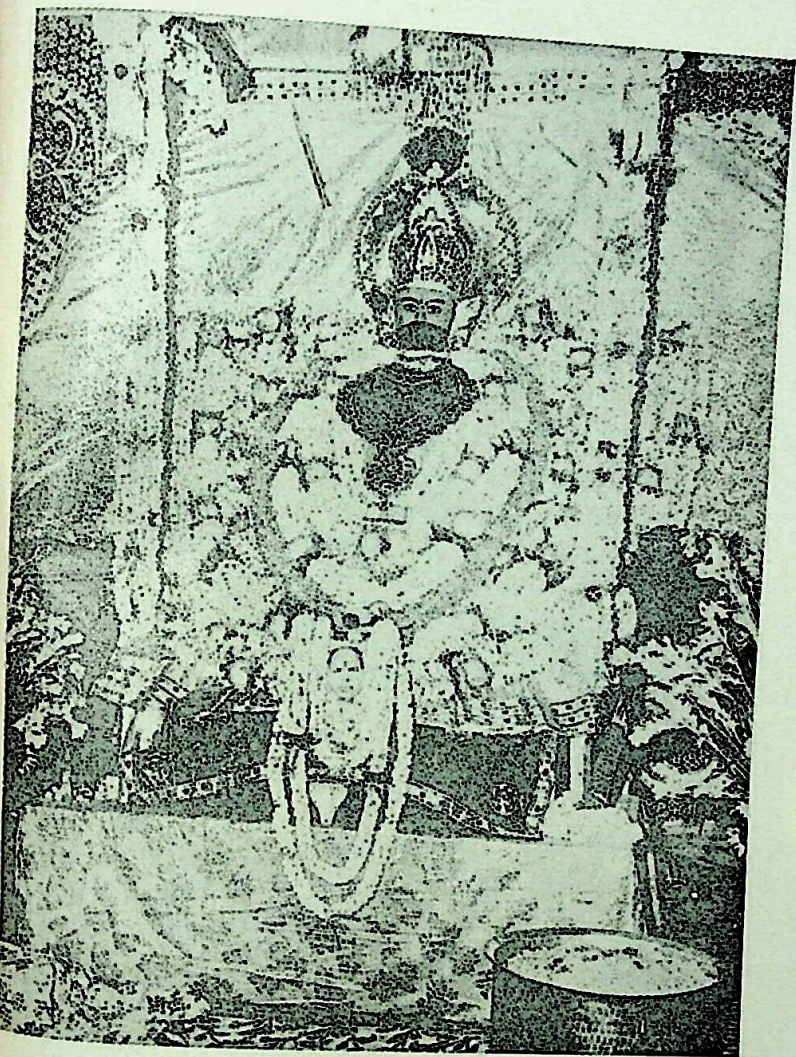
तृतीय वार्षिकोत्सव के अवसर पर प्रस्तुत भव्य झांकी ।

सलूणां श्याम

सलूणां श्याम म्हारे कानी जो वो जी
झूठा बहाना मत टोवोजी ॥टेर॥

कद्को बजाऊँ कान्हा थारी हजूरी।
ढ़ील दिया मेरे नाय सबूरी॥
अन्तर नैंनां बिलोवो जी ॥टेर॥

आख्यां दीवानी म्हारी श्याम दरस की।
कालजड़ै मं म्हार पीड़ा चसगी।
मैल मनारा म्हारा धोवो जी ॥टेर॥

पैला तो म्हारो जीव उलझायो।
किण कारण इब नाथ भुलायो।
चेत करो मत सोवो जी ॥टेर॥

जां दिन सूं थासू आँख लड़ी है।
जाण गयो तू मीठी छुरी है।
दूर ना दाता म्हांसू होवो जी ॥टेर॥

सेवा बजातां "काशी" मोय युग बीता।
ना जाणुं रामायण गीता
मत कर नण बिछोवो जी ॥टेर॥

बजरंगी बाला

प्यारी लागे औ वाला प्यारी लागे,
औ बजरंगी वाला सुरत थारी प्यारी लागे ।।टेर।।

तू दासन को दास तेरी, घर--घर पूजा भारी
राम के आज्ञा कारी हो थे, जाने दुनिया सारी
तेरी सेवा भाव और भक्ति, म्हानें प्यारी लागे ।।टेर।।

सिया की सुध लाये और लक्ष्मण के प्राण बचाये,
सब दुष्टों को मारा और सोने की लंक जलायें,
घर-घर छायीखुशियाँ भारी, म्हाने प्यारी लागे, ।।टेर।।

भूत-पिशाच निकट नहीं आवे, ऐसा रूप तुम्हारा,
पवन पुत्र हनुमान कहावे, अञ्जनी राजदुलारा,
म्हानें तेरो भरौसो भारी, म्हानें प्यारी लागे ।।टेर।।

माथे थारे तिलक विराजे गल पुष्पों की माला,
राम-सिया मन बसे तुम्हारे लाल लंगोटे वाला,
तेरा ध्यान धरे नर - नारी, म्हाने प्यारी लागे,

पावों में है घुंघरू डालें, हाथों में खड़ताल,
राम - नाम में मस्त हुआ, देखो अँजनी का लाल
घर-घर थारी चर्चा भारी, म्हानें प्यारी लागे ।।टेर।।

मदन गोपाल

श्यामा थारा घुंघर वाळा बाल,
जीव मेरो भरमायोजी मदन गोपाल।
श्यामा थारै बागै की अजब बहार,
नैनां धीर गमायोजी मदन गोपाल।
श्यामा थारा चंचल नैण विशाल,
भूल कदेनां जायो जी मदन गोषाल।
श्यामा थारै फेंट को रंग अनार,
तीखो तीर चलायोजी मदन गोपाल।
श्यामा थारो निरख २ सिणगार,
फूल्यो नाँय समायोजी मदनगोपाल।
श्यामा म्हारै हिवड़ माला हार,
आशा लेकर आयोजी मदन गोपाल।
श्यामा थे छो भगतांरा सिरदार,
नैया पार लगायो जी मदन गोपाल।
श्यामा म्हानैं चाकर राखो थारै द्वार,
सांवरियो मन भायोजी मदनगोपाल।
श्यामा थारो सेवक "काशीराम"
दर्शण कर हरषायोजी मदन गोपाल।

प्रीत

साँवरा लागी प्रीत निभाज्यो,
कोई बेसी नाँ तरसाज्यो जी,श्री श्याम खाटूवाला ॥ टेर ॥

श्याम थारो मन्दिर घणों सुरंगो,
थारै साफो सिर पचरंगो जी ॥ श्री० ॥

श्याम थारै बागै की छबि न्यारी,
थारी साँवली सुरत पर वारीजी ॥श्री०॥

श्याम थार सोहै कमर कटारी,
थारी ऊँची घणीं अटारी जी ॥ श्री० ॥

श्याम थारी मुरली भोत रसीली,
तनमन की सुध हरलीनी जी ॥ श्री० ॥

श्याम थे पीताम्बर पट धारी,
थे राखो लाज हमारी जी ॥ श्री० ॥

श्याम थारा रुण झुण नेवर बाजै,
बजंती माल गल साजै जी ॥ श्री० ॥

श्याम थारा 'काशीराम' गुण गावै,
थांरै चरणां मँ शीश नवावै जी ॥ श्री० ॥

भजन

भाया वेगो वेगो आजे रै

खाटू में श्री श्याम बिराजे दर्शन पाजेरै ॥ टेर ॥

एक साल के माईनैं रै मेला चार भरे छः

फागुन के मेला पर भाया गाढ़ी भीड़ पड़े छः

तूं सब घर का न लेआजे रै ॥ खाटू में श्री श्याम ॥

सूरज सामी बण्यो देवरो मकराना को मन्दिर

तोरण देख खुशी हो जाज्ये, पाछे जाजे अन्दर

भाया मन्दिर में घुस जाजे रै ॥ खाटू में श्री श्याम ॥

सामने श्री श्याम बिराजे, निज मन्दिर के मांही

आज मांगले मिल जावैलो, जो मांगे साच्चाई

थारा सोया भाग जगा ले रै ॥ खाटू में श्री श्याम ॥

खीर, चूरमा, माखन, मिश्री आं के भोग लगे छः

पाचूं टेमा होव आरती, झालर शंख बजे छः

यां के अखण्ड ज्योत जुवै छै रे ॥ खाटू में श्री श्याम ॥

चांदी को सिंहासन छत्तर सोनां का झूमै छः

बाबा की छांया माया, कई भगतां में घूमै छः

सांची सोहन लाल यूं कह छै रै ॥ खाटू में श्री श्याम ॥

दाता

गरीबों के दाता हो गरचे मुरारी,
मेरी पार नैया लगानी पड़ेगी,
जो तू ने करोड़ों की बिगड़ी सँवारी ॥ मेरी पार नैया ॥
गुजारा न होगा तूँ गरचे खफा है।
अगर तू मेरा है तो वेशक नफा है।
मैं सदियों से तेरे हूँ दर का भिखारी ॥ मेरी पार नैया ॥
तूं भण्डार है यों सुना है दया का।
शहनशाह है तूं ही सारे जहाँ का।
क्या तौहीन होगी दया की तुम्हारी ॥ मेरी पार नैया ॥
जमाने के मालिक मेरी आरजू है।
तुम्हीं से मेरे साँवले जुस्तजू है।
खता कौन 'काशी' की सुधि क्यों बिसारी ॥ मेरी पार नैया ॥

खाटु का बासी

तेरी सुरत मन भायी रे खाटु का बासी ॥ टेर ॥
म्हे तो र सांवरिया थान घणां ही उडीक्या,
थारी खबर न पायी रे खाटु का वासी ॥ तेरी ॥
मनड़ा क हाथां थान चिठी र भिजाई,
म्हारी सुध क्यूं भुलाई रे खाटु का बासीं ॥ तेरी ॥

मनस करी थी म्हार सांवरियो आवलो,
थार इतनी भूल कांई रे खाटु का वासी ॥ तेरी ॥
पागल बताव म्हान लोग खिझाव,
ऐयां हांसी क्यूं कराई रे खाटु का वासी ॥ तेरी ॥
सांवली सूरत पर बलि बलि जाऊं,
म्हान दरश कराई रे खाटु का वासी ॥ तेरी ॥
श्याम रंग लागेड़ा न श्याम ही निभाव,
म्हान या ही बात बताई रे गुरुराम "काशी" ॥ तेरी ॥

पीर पराई

कईया कोई जाणैगों पीर पराई।
बैं कई दर्द होय जैंके लागे,
तो दूजो कर क्यूं दवाई ॥ टर ॥
घायल जाणैं गति घायल की,
तो वो ही करेगो सुणाई ॥ टेर ॥
समझै गो वो ही इशारै में तेरे,
तो जिण सूं तूं आँख लड़ाई ॥ टेर ॥
बाट उड़ी कूँ श्याम पिया की
तो रातड़ली ढ़ल आई ॥ टेर ॥
ओ रसिया मत देर लगावै
तो नैंणा मं नीद भरयाई ॥ टेर ॥

पलक

एक बर ओ बाबा पलक उघाड़ बाट निहारै
थारो बालको जी राज ॥ टेर ॥

मनड़ै री पीड़ हरो नन्दलाल।
छानों नईं कछु थारै सूं हाल ॥
वेगो सो ढंग कर माल को जी राज ॥ एक बर ॥

ओजी ओ मिजाजी थारी करूँ मनुहार।
शरण पड़्यो थारै करल्यो विचार ॥
कष्ट हरो थारै लाल को जी राज ॥ एक बर ॥

थेई जाणों थारो काँई छै ध्यान।
मेरी बी वात मिजाजीड़ा मान ॥
लागै छैं डर थारी झाल को जी राज ॥ एक बर ॥

थाम लई जद थे पतवार।
तो फेरूँ तरसाणै म काँई सार ॥
वेगा जगाओ 'काशी' भाल को जी राज ॥ एक बर ॥

झलक

क्यों झलक एक दिखाकर मेरे सांवले
कसे पर्दा नसीं श्याम तुम हो गये,
मेरे नजदीक आकर कन्हैया बता,
किस खयालों में बोलो कि तुम खोगये ॥क्यों॥

मैं बुलाऊँ तुम्हें फिर भी आते नहीं,
किसलिये अपना जलवा दिखाते नहीं,
बे सहारा समझ कर भुलाया मुझे,
बेखबर बन गये नींद में सो गये ॥ क्यों ॥

जिगर में बसे हो ये क्या माजरा है,
बिना ही वजह मुझसे आके फंसे हो,
नजर क्या मिली जो दिवाने बने,
चोट ऐसी लगी होश गुम हो गये ॥क्यों॥

तुमको आवाज दूं तो भी सुनते नहीं,
मैं मनाता हूँ तुम फिर भी मानते नहीं,
तू ने आँखें लड़ा करके लूटा मुझे,
किसलिये सांवले बे-रहम हो गये ॥ क्यों ॥

दिलदार तुम हो, मेरे यार तुम हो,
गुनहगार हूँ मैं, मेरे प्यार तुम हो,
जो तू दीदार 'काशी' दिखादे हमें,
हम तो बेजार देखो सनम हो गये ॥क्यों॥

सुमरण

करो सियाराम का सुमरण,
अगर भुक्ति को पाना है।
अरे बाबा ये वो घर है,
जो एक दिन छोड़ जाना है।
मिला अनमोल ये हीरा,
जो फिर न हाथ आयेगा।
ये झुठे रिश्ते - नाते हैं,
न इससे मोह लगाना है।
ये तेरी - मेरी ना कर तू,
न तेरी है न मेरी है।
ये तेरी – मेरी तो पगले,
रे जीते जी का बाना है।
न संग में लाया है कुछ तो,
न संग में लेकर जायेगा।
मुट्ठी बाँध तू आया,
पसारे हाथ जायेगा।

सुरता

हाँये सुरता साँवरियो दिलदार पीड़ा थारी मेटसी ये मेरी मान
॥ पीड़ा थारी ॥
हाँये सुरता नेंणा सूं पीव निहार ॥ पीड़ा थारी ॥

मन मोहन मन में बसा तो बीसू करले प्रीत।
बैसूं वड़ो नँ पायसी अरै बावली मीत ॥
हाँ ये सुरता सोवण मँ काँई सार ॥ पीड़ा थारी ॥

हेत हरि सेती लगा, ज चाहवै आराम।
मंजिल तेरी दूर है तो यो ठगड़ाँ को गाँव॥
हाँ ये सुरता जीवन मरण सुधार ॥ पीड़ा थारी ॥

ले ले शरणो श्याम को तो मतना देवै पोत।
मूरख को के बीगड़ै तो समझदार की मौत॥
हाँ ये सुरता करले कन्हैया सूँ प्यार ॥ पीड़ा थारी ॥

मान मान हठ क्यूँ करै ये सुरता नादान।
श्याम बहादुर श्याम नै, तो वेगी सी ले जाण॥
हाँ ये सुरता हो ज्या जरा हुसियार ॥ पीड़ा थारी ॥

रंग रसिया

ओजी म्हानै खाटू धाम बुलाल्यो जी,
म्हारा श्याम सुन्दर रंगरसिया ॥ टेर ॥
दाता थारी नितकी बाट निहारूं,
थे आकर दर्श दिखावो जी ॥ म्हारा ॥
थारो टाबर घणो दुःख पावै,
थे वेगा आय सम्भालो जी ।
या दुनियाँ घणी कलपावै
म्हानै था बिन कछु एन भावजी ॥ म्हारा ॥
दाता एक बर दरश दिखावो,
म्हानै चरणा सूं लिपटावोजी ॥ म्हारा ॥
थानैं नित नया भजन सुनाऊं,
मैं थारा ही गुण गाऊंजी ।
थारी नित की ज्योत जगाऊँ,
म्हारो हिवड़ो भर भर आवैजी ।
म्हानै सतगुरु काशी मिलिया,
थारो दास समझ अपनाल्योजी ॥ म्हारा ॥

बेटी जाट की

थाली भरकर ल्याई खीचड़ो, घी की ल्याई बाटकी,
जीमो म्हारा सांवरिया, जीमावे बेटी जाट की ।। टेर ।।

बाबो म्हारो गाँव गयो छ वो जाणैं कद आवेलो
उणीं भरोसे रहवगो तो भूखो ही रह जावेलो
आज जिमाऊं खीचड़लो, तनैं काल राबड़ी घाट की ।। टेर ।।

बार बार मन्दिर ने जुड़ती, बार बार में खोलती
कईयां कोनी जीमें ठाकुर, करड़ी करड़ी बोलती
तूं जीमे लो जद मैं जीमूं, मानूं नहीं कोई लाटकी ।। टेर ।।

पड़दो भूल गई सांवरिया, पड़दो तुरत लगायो जी,
धाबलिये के ओले बैठकर श्याम खीचड़ो खायो जी,
भोला ढाला भगतां कै सांवरिया कईयां आँट की ।। टेर ।।

भक्ति हो तो करमां जैसी ठाकुरजी घर आवेला,
सोहनलाल लोहाकार प्रभु का हरष-हरष गुण गावेला,
सच्चो प्रेम प्रभु से हो तो मूरत बोले काठ की ।। टेर ।।

घनश्याम कन्हैया

घनश्याम कन्हैया साँवलिया, मेरा तो प्रभु आधार है तू।
मैं तेरे सहारे जीता हूँ, इस दुखिया का संसार है तू ।।टेर।।

तेरे आगे प्रभु रो लेता हूँ।
मन मैल मेरा धो लेता हूँ।
दुनियाँ में नहीं कोई और मेरा, इस नैया की पतवार है तू ।।टेर।।

तुम दीन-दुःखी के दाता हो।
मेरे तो भाग्य विधाता हो।
प्रभु तुम से पुराना नाता हो, मीठी सी मेरी तकरार है तू ।।टेर।।

जिस हाल में रखोगे केशव।
उसमें ही गुजारा कर लूंगा।
पर साफ तुम्हें कह देता हूँ, हे मुरारी मेरा दिलदार है तू ।।टेर।।

इस दरके भिखारी को मोहन।
कितना ही जलाओ तड़फाओ।
चरणों में पड़ा रहने दो मगर "काशी" के हृदय का करार है तू
।।टेर।।

श्री श्याम प्रार्थना

हाथ जोड़ विनती करूँ, सुणज्यो चित्त लगाय।
दास आगयो शरण में, रखियो उसकी लाज।।
धन्य ढुँढारो देश है, खाटु नगर सुजान।
अनुपम छवि श्री श्याम की, दर्शन से कल्याण।।
श्याम-श्याम मैं रटूँ, श्याम है जीवन प्राण।
श्याम भक्त जग में वड़े, उनको करूँ प्रणाम।।
खाटु नगर के वीच में, वण्यो आपको धाम।
फागुन शुक्ला मेला भरे, जय जय वावा श्याम।।
फागुन शुक्ला द्वादशी, उत्सव भारी होय।
वावा के दरवार से, खाली जाय न कोय।।
उमापती, लक्ष्मी पती, सीता पती श्री राम।
लज्या सवकी राखियो, खाटु के श्री श्याम।।
पान सुपारी ईलायची, अतर सुगन्धी भरपूर।
सव भक्तन की विनती, दर्शन देवो हजूर।
'काशी राम' तो प्रेम से, धरे श्याम का ध्यान।
श्याम मण्डल पावे सदा, श्याम कृपा से मान।।

आरती

श्याम बिहारी जी की आरती गाओ रे।
बाबा के चरणों में शीश नवाओ रे।

चन्दन अग्र कपूर की बाती, प्रेम से कंचन थाल सजाओ रे।
शंख मृदंग घड़ावल बाजे, झांझन की झनकार सुनाओ रे।
स्वर्ण कलस सिर छत्र बिराजे, आज उमंगों के दीप जलाओ रे।
मोर मुकुट गल मोतियन माला, रेशम डोरी के झूले झुलाओ रे।
केशर तिलक केसरिया बागा, मोदक श्रीफल भेंट चढ़ाओ रे।
ऊँची अटरिया पे श्याम बिराजे, श्याम सलोनेके चँवर ढुलाओ रे।
शिव शरणागत दास तिहारो, डूबती नैया को पार लगाओ रे।

श्याम तन श्याम मन श्याम ही है मेरा धन
अन्धे की सी लाकड़ी श्याम ही आधार है

जय श्री श्याम

जीवन को ऊंचा उठाना है तो,

योगी	बनो	पर	रोगी	नहीं
स्वस्थ	बनो	पर	मोटे	नहीं
बलवान	बनो	पर	दुष्ट	नहीं
खरे	बनो	पर	खारे	नहीं
धीर	बनो	पर	सुस्त	नहीं
सरल	बनो	पर	मूर्ख	नहीं
सावधान	बनो	पर	वहमी	नहीं
उत्साही	बनो	पर	जल्दबाज	नहीं
न्यायी	बनो	पर	निर्दयी	नहीं
चंगे	बनो	पर	दुर्बल	नहीं
दृढ़	बनो	पर	हठी	नहीं
प्रेमी	बनो	पर	पागल	नहीं
समालोचक	बनो	पर	निन्दक	नहीं
नम्र	बनो	पर	चापलूस	नहीं
स्पष्ट	बनो	पर	उद्दण्ड	नहीं
चतुर	बनो	पर	कुटिल	नहीं
मितव्ययी	बनो	पर	कंजूस	नहीं
गम्भीर	बनो	पर	मनहूस	नहीं

पुस्तक प्राप्ति स्थान :—

फोन : ५५-९८२१

श्री श्याम मण्डल
२३/१, टेगोर कैशल स्ट्रीट,
कलकत्ता-६

मुद्रक :—लक्ष्मी प्रिंटिंग वर्क्स लि०, कलकत्ता-६